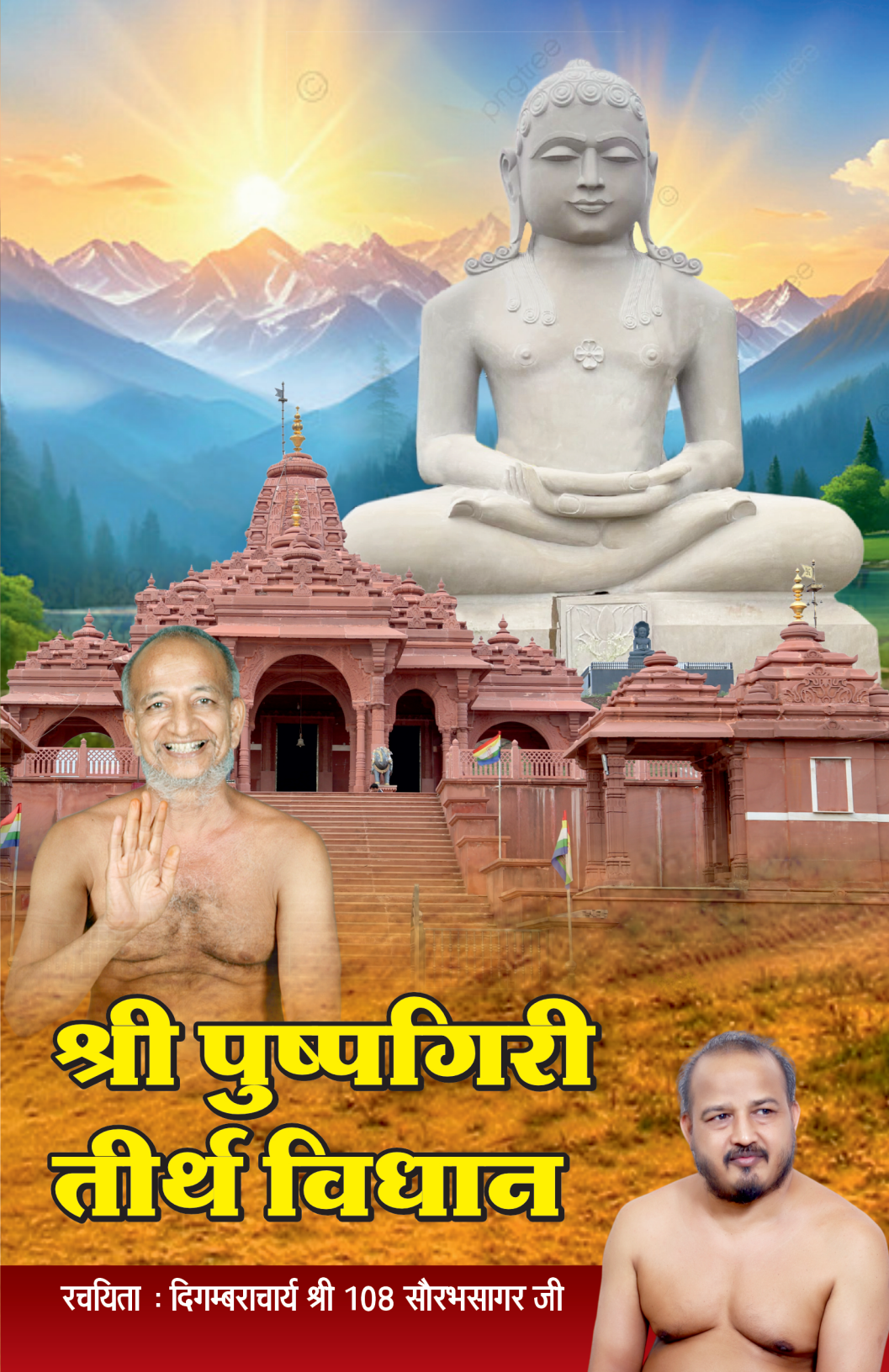

श्री पुष्पगिरी तीर्थ विधान

रचयिता : दिगम्बराचार्य श्री 108 सौरभसागर जी

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।
श्री धरसेनाचार्य देव पुष्पदन्त एवं भूतबलि मुनिवरों
को षट्खण्डागम का उपदेश देते हुए।

श्री पुष्पगिरी तीर्थ विधान

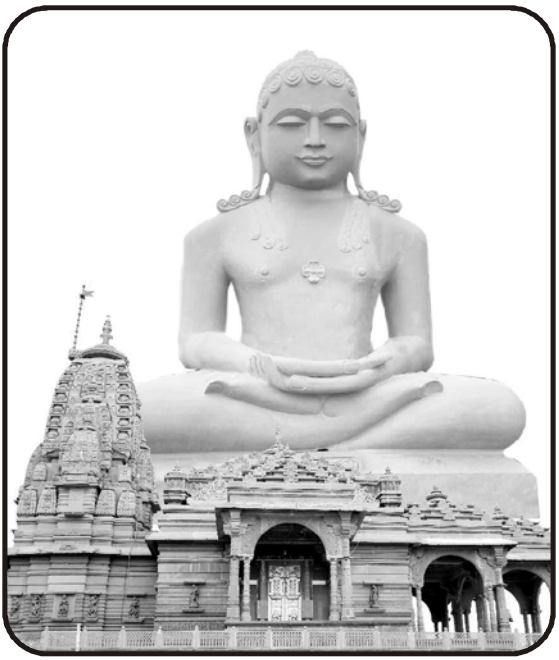

परम पूज्य संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
आचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज की पावन प्रेरणा से
पुष्पगिरी तीर्थ में विराजमान 21 फिट उतंग परम् देवाधिदेव पद्मप्रभु भगवान

:: रचयिता ::
दिगम्बर जैनाचार्य श्री 108 सौरभसागर जी

कृति	:	**श्री पुष्पगिरी तीर्थ विधान**
शुभाशीष	:	पुष्पगिरि प्रणेता परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 पुष्पदंतसागर जी महाराज
कृतिकार	:	परम पूज्य आचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज
संस्करण	:	द्वितीय, जुलाई 2025 (प्रतियां 1100)
प्रकाशक	:	सौरभांचल प्रकाशन (क्र. 121)
प्राप्ति स्थल	:	1. **श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र,** पुष्पगिरि, सोनकच्छ, जिला देवास (म.प्र.) फोन : 07270-22870 2. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थ सौरभाँचल,** श्री श्रुत स्कन्ध मन्दिर जी.टी. करनाल रोड, गन्नौर (हरियाणा) 3. **श्री दिगम्बर जैन मंशापूर्ण महावीर क्षेत्र जीवन आशा हॉस्पिटल** कावड़ मार्ग, गंगनहर, मुरादनगर (गाजियाबाद)
मूल्य	:	रु. 60/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली मो.: 9811374961, 9811363613 pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

विधान पुस्तक प्राप्ति स्थल

सौरभांचल प्रकाशन

गणधर गारमेन्टस IX/842, प्रेम गली नं. 3-सी, मुलतानी मौहल्ला, सुभाष रोड, गांधी नगर, दिल्ली-110031	**मनोज कुमार जैन** E-17/9, कृष्णा नगर, दिल्ली-110051 मो. : 9810056286

"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो" एक ऐतिहासिक सत्य

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

जैन धर्म में देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा ही सम्यग्दर्शन में कारण है। चौबीस तीर्थंकर एवं 1452 गणधर तथा द्वादशांगमय श्रुतज्ञान होने के उपरांत भी वर्तमान काल में तीर्थंकर महावीर स्वामी का शासन काल होने के कारण मंगल स्वरूप वे ही हैं इसलिए **"मंगलं भगवान् वीरो"** कहकर **"दीपावली पर्व"** को महत्व दिया जाता है तथा उनके प्रथम गणधर गौतम स्वामी की दीक्षा की स्मृति को **"मंगलं गौतमो गणी"** कहकर **"गुरु पूर्णिमा"** के रूप में महत्व दिया जाता है तथा 633 वर्ष बीतने के उपरांत श्रुत विच्छेद न हो जाये इसलिए मंत्र ज्ञाता धरसेनाचार्य ने अपना अंग श्रुतज्ञान आचार्य पुष्पदंत स्वामी को समर्पित किया और कहा भी है–

जयउ धरसेण णाहो जेण महाकम्म पयडि पाहुड सेलो।
बुद्धि सिरेणुद्धरियो समप्पियो पुप्फदंतस्स॥
(ध.पु.भा.-2)

अर्थात् वे धरसेन स्वामी जयवंत हों, जिन्होंने **महाकर्मप्रकृति** प्राभृत रूपी पर्वत को अपनी बुद्धिरूपी मस्तक पर धारण करके **आचार्य पुष्पदंत** को समर्पित किया।

उनसे शिक्षित शिष्य **आचार्य पुष्पदंत** ने **सर्वप्रथम णमोकार मंत्र** को निवद्ध मंगल कर षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखना प्रारंभ किया एवं गणधर वलय मंत्र के साथ स्वामी भूतबलि आचार्य ने ग्रन्थ पूर्ण किया। इस उपलक्ष्य में **"श्रुतपंचमी"** पर्व मनाया जाता है यही ऐतिहासिक सत्य है इसलिए शुद्ध ग्रन्थ के प्रथम लेखक के रूप में **ऋषि सभा के अधिपति आचार्य पुष्पदंत स्वामी** का स्मरण करते हुए **"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो"** कहा जाता है।

ये तीनों ही जैनधर्म के उत्कृष्ट मंगल स्वरूप हैं। इसलिए धवलाकार वीरसेन स्वामी ने कहा–

"तदो मूलतंत कत्ता वद्ढ़माण भडारयो, अणुतंत कत्ता गौदम स्वामी उवतंत कत्तारा भूदबली पुप्फदंतादयो वीयराय दोष मोहा मुणिवरा"
(ध.पु.भा.-1, पृ:73)

अर्थात् मूलग्रंथ कर्ता वर्द्धमान भट्टारक अणुतंत कर्ता गौतम स्वामी, उपतंत ग्रंथ कर्ता भूतबलि पुष्पदंतादि, वीतराग दोष मोह रहित मुनिवर हैं।

इसे ही शुद्ध दिगम्बर आगम प्रमाणानुसार निम्न श्लोक के रूप में कहा जाता है–

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

गणाचार्य श्री 108 पुष्पदंत सागर जी का जीवन परिचय एवं संस्कृति विकास की एक झलक

जन्म	:	01 जनवरी 1954
स्थान	:	गोंदिया, महाराष्ट्र
बचपन का नाम	:	सुशील जैन
पिता का नाम	:	श्री कोमल चन्द जी जैन
माता का नाम	:	श्रीमती मथुरादेवी जी जैन
क्षुल्लक दीक्षा	:	02 नवम्बर 1978 (सिद्धक्षेत्र नैनागिरी जी)
ऐलक दीक्षा	:	14 जनवरी 1980 (सिद्धक्षेत्र नैनागिरी जी)
मुनि दीक्षा	:	31 जनवरी 1980 (बाला बेहट, उ.प्र.)
दीक्षा गुरु	:	आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
आचार्य पद	:	21 मार्च 1986 (गोम्मटगिरी, इंदौर)

दर्शन एवं विचार के जगत में वर्तमान श्रमण संतों की परम्परा में गणाचार्य श्री 108 पुष्पदंत सागर जी महाराज अपनी विलक्षणता, दूरदर्शिता एवं दार्शनिकता के लिए अनूठा स्थान रखते हैं। आपकी तर्कपूर्ण अभिव्यक्ति एवं बोधगम्य समाधान शैली स्वस्थ एवं सुगम मार्ग प्रदान करने का अद्‌भुत कौशल रखते हैं।

आप अप्रकंप संकल्प के धनी दृढ़ निश्चयी, महामनस्वी, कृतज्ञता की प्रतिमूर्ति, इष्ट के प्रति समर्पित स्वयं अनुशासित एवं अनुशासन के सजग प्रहरी हैं, प्रबल तर्कबल मनोबल से सम्पन्न हैं, आप मूल गुणानुरूप पञ्चाचार, त्रिगुप्ति, दशधर्म, बारह तप, षट्आवश्यक, बाइस परिषह, पंचमहाव्रत, समिति, इन्द्रिय निरोध, सप्त शेष गुणों को साधना का आधार मानकर सदैव संयमानुरागी बनकर चलते हैं। आपका छोटा कद-छरहरा बदन, गौर वर्ण, अधरों पर खिलती मुस्कान, निर्द्वन्द मुख-मण्डल, सहज ओजस्वी चेहरा वशीकरण मंत्र है। आप बाल संघ के नायक हैं आप समताभावी, चमत्कारी, कृपालु, अद्वितीय अविभावक सन्त हैं। आप अनंतगुण विभूषित, प्रवचन वाचस्पति, निर्भीक, परोपकारी, प्रखर प्रवक्ता, तेजस्वी, महाकवि, लेखक,

भक्तोद्धारक, प्रज्ञा एवं प्रतिभा के प्रचण्ड सूर्य, सन्त शृंखला के ध्रुव तारे, अन्तश्चेतना के संवाहक, भक्तों के सिरमोर आँखों के तारे, पुष्पगिरी प्रणेता, श्रद्धा लोक के देवता, कलयुग के महावीर आचार्य परमेष्ठी हैं। आपकी चर्चा एवं चर्या छल रहित स्वाभाविक है। आप निन्दक से डरते नहीं मगर निन्दा कभी करते नहीं, सत्य का स्वागत करते हैं आप दुख हर्ता हैं, सुख कर्ता हैं, समदृष्टा हैं, अतिशय योगी हैं, पतितोद्धारक हैं, बुद्धिमान हैं, शास्त्रज्ञ हैं, लोक व्यवहार कुशल हैं, आप सरस्वती के वरद पुत्र, महावीर के लघुनन्दन हैं। आप संघर्ष में हर्ष, उपसर्ग को उपहार मानकर निस्पृह वृत्ति से जीते हैं। आप अपने भाग्य के निर्माता हैं, आपको बीसवीं सदी के ऋषि परम्परा के पंचम पट्ट के आचार्य पद पर प्रतिष्ठापित दीक्षित करने का गौरव प्राप्त है। आप वात्सल्य दिवाकर हैं, आप पंथानुरागी नहीं महावीर के पथानुरागी हैं। आपका चुम्बकीय व्यक्तित्व, प्रभावी वाणी, चिन्तन की गहराई, संयम की ऊँचाई, कोमल हृदय से बहती करुणा की निर्झरणी, अद्भुत वात्सल्य बरसाती है। आपके रग-रग में "जीओ और जीने दो" की भावना समाहित है, आपकी प्रत्येक वाणी में "परस्परोपग्रहो जीवानाम्" की एक अनुगूँज है, आपकी प्रत्येक चर्या में "तरो और तारो" की एक झलक है। आपकी प्रत्येक मुस्कुराहट में "हंसों और हंसाओ" की प्रेरणा है, आपकी प्रत्येक उठती निगाहों में "उठो और उठाओ" की सद्भावना है, आपके प्रत्येक आशीष में "सँभलो और सँभालो" का दिव्य उद्घोष है, आपके मन में मानव उत्थान की एक यथार्थ कल्पना है आपने तर्क रहित मैत्री, स्वार्थ रहित सेवा, तनाव रहित परिवार, विवाद रहित गाँव, युद्ध रहित विश्व की भावना लेकर पुष्पगिरी तीर्थ को केन्द्र बनाया है आप परिवार में सहनशील, समाज में कर्मशील, जीवन में धर्मशील बनने की सतत प्रेरणा देते हैं। आप अतीत के जानकार, भविष्य के दृष्टा होते हुए भी वर्तमान में धैर्य समता समय का इंतजार करने में माहिर हैं। आप जानते हैं **'इन्तजार करने और अधीर हो उठने में'** जरा-सा अन्तर है। इन्तजार में शान्तिपूर्ण प्रगति है, अधीरता में तनावपूर्ण सफलता का रहस्य समाया है। जिसने आपका शिष्यत्व पाया वह धन्य है। गुरुदेव गणाचार्य पुष्पगिरी प्रणेता श्री पुष्पदंतसागर जी महाराज के प्रेरित अनुपम कृति श्री पुष्पगिरी तीर्थ की आराधना में **"श्री पुष्पगिरी तीर्थ विधान"** उनके चरणों में अर्घ्यावली है भक्तों के लिए श्रद्धावली है।

वृहत् शान्तिधारा पाठ

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्-रत्नत्रयरूपाय दिव्यतेजोमूर्त्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणसहिताय, अनन्तचतुष्टयसहिताय, समवसरण-केवलज्ञान-लक्ष्मीशोभिताय, अष्टादश-दोषरहिताय, षट्-चत्वारिंशद्-गुणसंयुक्ताय, परमेष्ठि-पवित्राय, सम्यग्ज्ञानाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय, अनंत-संसार- चक्रप्रमर्दनाय अनन्तज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे उपसर्गविनाशनाय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय अस्माकं (अमुक राशिनामधेयानां) व्याधिं घ्नन्तु। श्री जिनाभिषेकपूजन प्रसादात् अस्माकं सेवकानां सर्वदोष, रोग, शोक, भय, पीड़ा, विनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष, दोष, कल्मषाय, दिव्य-तेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्न, प्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्वारिष्ट, शान्ति, कराय ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्न-शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु-कुरु स्वाहा ।

मम कामं शान्तिं-शान्तिं । रतिकामं शान्तिं-शान्तिं ।
बलिकामं शान्तिं-शान्तिं । क्रोधं-पापं-वैरं च शान्तिं-शान्तिं ।
अग्निवायुभ्यं शान्तिं-शान्तिं । सर्वशत्रु-विघ्नं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वोपसर्गं शान्तिं-शान्तिं । सर्वविघ्नं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वराज्य दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं । सर्वचौर दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्व-सर्प-वृश्चिक-सिंहादिभयं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वग्रहभयं शान्तिं-शान्तिं । सर्वदोषं व्याधिं डामरं च शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वपरमंत्रं शान्तिं-शान्तिं । सर्वात्मघातं परघातं च शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वशूल कुक्षि अक्षि शिरो ज्वररोगं शान्तिं-शान्तिं । सर्वमारिं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वगजाश्व गौ-महिष-अजमारिं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वराष्ट्रमारिं शान्तिं-शान्तिं । सर्वक्रूर-वेताल डाकिनी-भयानि शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वापस्मारिं शान्तिं-शान्तिं । अस्माकं सर्व अशुभकर्म-जनित-दुःखानि शान्तिं-शान्तिं।
दुष्टजनकृतान्-मंत्र-तंत्र-दृष्टि-मुष्टि-छल-छिद्रदोषान् शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वदुष्ट-देव-दानव-वीर-नर-नाहर-सिंह-योगिनी-कृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं ।
सर्व-अष्टकुली-नागजनित-विषभयानि शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वस्थावर जंगम वृश्चिक सर्पादिकृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं।
सर्वसिंहाष्टा-पदादि कृतदोषान शान्तिं-शान्तिं ।

परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि कृतदोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्व कर्माष्टकं शान्तिं-शान्तिं। ॐ ह्रीं अस्मभ्यं चक्र-विक्रम-सत्त्व-तेजो-बल-शौर्य-वीर्य-शान्तीः पूरय पूरय। सर्वजीवानंदनं कुरु कुरु जनानंदनं कुरु कुरु भव्यानंदनं कुरु कुरु सर्व गोकुलानंदनं कुरु कुरु। सर्वराजानंदनं कुरु कुरु । सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटंब-पतन-द्रोणमुख-संवाहनानंदनं कुरु कुरु । सर्वानंदनं कुरु कुरु स्वाहा ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेममारोग्यं, स्वस्तिरस्तु विधीयते।।

श्रीशान्तिरस्तु । शिवमस्तु । जयोस्तु । नित्यमारोग्यमस्तु । सर्व जीव कल्याण मस्तु। दीर्घायु रस्तु। शुभ अस्तु। सुकीर्ति रस्तु। धन धान्य समृद्धि रस्तु। सर्व रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु। सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्र वृद्धि रस्तु। अस्माकं तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । समृद्धिरस्तु । कल्याणमस्तु । सुखमस्तु । अभिवृद्धिरस्तु । दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्र धनानि सदा सन्तु । सद्धर्म श्रीबलायुरारोग्यै- श्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज पूजित सुरराय।।
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुब्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद शीश झुकायें।।

ॐ ह्रीं श्रीं *वृषभादि वीरान्तरेभ्यः शान्तये शान्तिधारा स्वाहा।*

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं *इति* ह्रौं सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीर जिनेंद्राय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसिहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

अर्घ

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिनगृहे अभिषेकमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वर्धमानपर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो महाशांतिधाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''देव-शास्त्र-गुरु-जिनतीर्थ-अकृत्रिम तीर्थ तीस चौबीसी विद्यमान 20 तीर्थंकर-निर्वाण भूमि''

की

समुच्चय पूजन *

(आचार्य श्री सौरभ सागर जी महाराज द्वारा रचित)

परम् देव अरिहंत सिद्ध गुरु, आचारज साधु उवज्झाय।
माँ जिनवाणी बीस जिनेश्वर, विद्यमान तीर्थंकर ध्याय।।
तीर्थंकर मुनि मोक्ष भूमि अरुँ, अकृत्रिम जिन वंदन है।
तीस चौबीसी तीर्थंकर का, आह्वाहन स्थापन है।।

ॐ ह्रीं अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिन बिम्ब समूह-तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह-अत्र अवतर अवतर-अत्र तिष्ठ-तिष्ठ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

जल

जल जीवन रक्षित करता है, शांत स्वभावी सरल तरल।
चरणों में जल अर्पित करता, पाने को शुभ मोक्ष महल।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय **जलं** निर्वपामीति स्वाहा।

---

*कभी-कभी समय की अल्पता के कारण आराधना के तीव्र भाव उत्पन्न होते हैं उन सभी आराधना चाहने वालों के लिए आचार्यश्री ने महाउपकार करके एक साथ "पंच परमेष्ठी, माँ जिनवाणी, विद्यमान बीस तीर्थंकर, अढाई द्वीप, सम्पूर्ण निर्माण भूमि, अकृत्रिम जिनबिम्ब (प्रतिमा) एवं तीस चौबीसी" की समुच्चय पूजा की रचना की है।

चंदन

ताप विनाशक तन का चंदन, पूज्य चरण में लें आया।
क्रोध द्वेष प्रतिशोध त्यागकर, शीतल सुरभित गुण गाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह संसार ताप विनाशनाय **चंदनं** निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

सिद्ध शिला का वासी आतम, पापी बन भव घूम रहा।
त्रय योगों को स्थिर करके, द्रव्य चढ़ा मन झूम रहा।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अक्षय पद प्राप्ताय **अक्षतं** निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम भोग का रोग भयंकर, मन बगियाँ में खिलता हैं।
वैरागी प्रभु के सम्मुख आ, काम भाव सब मिटता हैं।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह कामबाण विनाशनाय **पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

पतितोद्धारक आप निराकुल, क्षुधारोग से पीड़ित हूँ।
धर्म ध्यान की औषध पाकर, भक्ति भाव से जीवित हूँ।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह क्षुधा रोग विनाशनाय **नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्या भाव का महा तिमिर प्रभु, काल अनादि से भीतर।
तव दर्शन की शुभ्र दीप से, ज्योतिर्मय आतम अंदर।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोहांधकार विनाशनाय **दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

तव चरणों की धूपायन में, कर्म धूप खेनें आया।
धर्म गंध चारों दिश फैले, मन पूजा कर हर्षाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अष्ट कर्म विनाशनाय **धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।

फल

भक्ति भाव की दिव्य तरु में, चढ़कर रत्नत्रय पाऊँ।
जिन गुण फल आतम में प्रगटे, सिद्धालय में रम जाऊँ।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोक्षफल प्राप्ताय **फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

पंचपरम गुरु परमेष्ठी हैं, पूज्य पुरुष अरिहंत मुनि।
सिद्ध निरामय निराकार हैं, अष्ट कर्म के कष्ट हनि।।1।।

आचारज उवज्झाय साधुगण, ज्ञानध्यान तप लीनयति।
णमोकार नित जपकर करता, चरण वंदना जैनमति।।2।।

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व प्रभो
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांश पद, वासु विमलानन्त नमो।।3।।

धर्म शान्ति कुन्थु अरनाथा, मल्लि मुनिसुव्रत नमि जपूं।
नेमी पारस महावीर जी, वर्तमान चौबीसी भंजू।।4।।

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी, अष्टापद पावा गिरनार।
चम्पापुर सह ढाई द्वीप की, मोक्ष भूमि बन्दूँ शतवार।।5।।

सीमंधर से अजितवीर्य तक, विद्यमान श्री बीस जिनेश।
क्षेत्र विदेह में देह रहित हो, हरते सारे कर्म क्लेश।।6।।

आठ कोटि अरुँ छप्पन लक्षा, सत्तावन हज्जार कहें।
चार शतक इक्यासी प्रतिमा, नमन उन्हें शतवार करें।।7।।

जिनप्रतिमा अकृत्रिम जग में, दिव्य रूप है वृहद विशाल।
ऊर्ध्व अधो अरुँ मध्य लोक के, जिन प्रतिमा बन्दूँ त्रयकाल।।8।।

ऐरावत और भरत क्षेत्र के, तीर्थंकर गुणगान करूँ।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीस चौबीसी ध्यान धरूँ।।9।।

प्रभु पूजन दर्शन वंदन से, निद्धत निकाचित कर्म कटें।
अनुपम आत्मिक अव्यय सुख का, सूरज निज आतम प्रगटे।।10।।

दिव्य ध्वनि की निर्मल वाणी, माँ जिनवाणी कहलाती।
दिव्य ज्ञान दे अन्तर्मन की, कल्मषता सब धो जाती।।11।।

परमेष्ठी जिनवाणी माता, क्षेत्र विदेह के बीस जिनेश।
सिद्ध भूमि अकृत्रिम प्रतिमा, तीस चौबीसी के तीर्थेश।।12।।

देव शास्त्र गुरु तीरथ भूमि, तीर्थंकर को सदा नमूँ।
अर्घावली चरणों में देकर, शुद्धातम को सदा भजूँ।।13।।

दोहा- **कर्म रहित जिनदेव की, भक्ति करे कल्याण।**
"सौरभसागर" नित नमें, पाने शाश्वत धाम।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जयमालाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **परमेष्ठी श्रुत बीस जिन, तीस चौबीसी ध्याय।**
अकृत्रिम जिनराज भज, सिद्ध भूमि सिर नाय।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री पुष्पगिरी तीर्थ विधान

माण्डला

कुल अर्घ्य 27

पुष्पगिरी तीर्थ विधान

स्थापना

पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पार्श्वनाथ भगवान हैं।
पदम प्रभु की प्रतिमा मनहर, अतिशय क्षेत्र महान है।।
बाल यति नेमी वीरा सह, मुनीसुव्रत जिन वंदन है।
आह्वानन स्थापन करता शांति नाथ अभिनंदन है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(जल)

भाव समर्पण का जल लेकर, चरणों में अर्पित करता।
जन्म जरा मृत नाश करो प्रभु, विनयवन्त चरणों झुकता।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

(चन्दन)

शीतल चंदन गंध वान हो, सबको देता दिव्य सुवास।
मसले कुचले काटे जलाए, सुरभित करता हर संताप।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

(अक्षत)

मन वच तन को पावन करके, सुंदर तंदुल लाया हूं।
अक्षय पद की करूं कामना, अक्षत चरण चढ़ाया हूं।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्प)

कोमल कलियां डाली खिलती, सुबह शाम का जीवन है।
पुष्प चढ़ाकर काम नशाऊँ, समकित जीवन पावन है।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(नैवेद्य)

क्षुधा वेदना बेचैनी दे, भक्ति मन की हरती है।
चरणों में नैवेद्य समर्पित, खुशियां शांति भरती है।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दीप)

जगमग जगमग दीपक जलता, बाहर का जग दिखलाता।
ध्यान दीप अंतस में जलकर, केवल ज्ञान को प्रगटाता।।

पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

(धूप)

अष्ट कर्म के नाशन हेतु, अष्टगंध मय धूप लिया।
अष्ट अंग चरणों में अर्पित, भक्ति में मन झूम लिया।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

(फल)

लौकिक फल कि नहीं तमन्ना, मोक्ष महाफल चाहूंगा।
पादप फल चरणों में अर्पित, त्याग भाव प्रगटाऊंगा।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्घ्य)

ईषत प्राग्भार भूमि पर, आप विराजे श्री भगवान।
अष्टद्रव्य मय अर्घ चढ़ाऊँ, जीवन होवे आप समान।।
पुष्पगिरी का पावन तीरथ, पारसनाथ भगवान है।
भू प्रगटित जिन पावन प्रतिमा अतिशय क्षेत्र महान है।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी जिनालयस्थ श्री पार्श्वनाथ सह सर्व जिनदेवाय नमः अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पुष्पगिरी की अर्चना, करे पाप संहार।
पुष्पांजलि क्षेपण करुँ, श्रद्धा मन में धार।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत

सम्पूर्ण जिनालय अर्घ्यावली

भूगर्भ प्रगटित पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक)

दिव्य कांति ले धरती भीतर पारस मूरत गड़ी रही।
महातीर्थ एक बने यहां पर शांत छवि ले पड़ी रही।।
पुष्पगिरी की जगी कल्पना पार्श्वनाथ दर्शन पाए।
अतिशय कारी बालयति जिन अर्घ चढ़ाकर गुण गाए।।1।।

ॐ ह्रीं भू-गर्भ प्रगटित श्री पुष्पगिरी तीर्थ मूलनायक श्री पार्श्वनाथ नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रतनाथ वेदी (पार्श्वनाथ जिनालय)

क्षण भंगुर जीवन माया है, भोग रोग का जीवन है।
मुनिव्रत धारूं मुनिसुव्रत सा, संवेगी मन पावन है।।
शरण आपके आया जिनवर, भवोदधि से करदो पार।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति गाऊँ, पाऊँ सिद्धालय का द्वार।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे पार्श्वनाथ जिनालय मध्ये विराजमान श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ वेदी (पार्श्वनाथ जिनालय)

करुणा की धारा बहती है, नेमीनाथ के जीवन से।
क्रन्दन पशुओं का सुन करके, मुक्त हुए ग्रह बंधन से।।

राजुल छोड़ा कदम बढ़ाया, जूनागढ़ से गढ़ गिरनार।
पुष्पगिरी में अर्घ्य चढ़ाऊँ, नेमीनाथ है तारण हार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे पार्श्वनाथ जिनालय मध्ये विराजमान श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ जिनालय परिक्रमा चौबीसी

पार्श्व जिनालय प्रदक्षिणा में, चौबीसो तीर्थंकर है।
पुण्य विकासक भव्य मनोहर, श्वेत वर्ण के जिनवर है।।
परिक्रमा दे जिन दर्शन कर, निज दर्शन शांति पाऊँ।
चरण कमल में अर्घ समर्पित, पुष्पगिरी भक्ति गाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थ पार्श्वनाथ जिनालय परिक्रमा मध्ये स्थापित चौबीसी जिन बिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ जिनालय सम्मुख मानस्तम्भ

पार्श्व प्रभु जिन मंदिर सम्मुख, ऊंचा मानस्तंभ है।
यंत्र मंत्र भव गाथा पूरित, पार्श्वनाथ जिन बिम्ब हैं।।
भक्ति ये यशगान करूं हे, कल्याणधाम श्री पार्श्व जिनेश।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ चढ़ाऊँ, विघ्न हरे काटे भव क्लेश।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे श्री पार्श्वनाथ जिनालय सम्मुख स्थापित मानस्तम्भ मध्य विराजमान सर्व जिन प्रतिमाभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभु जी जिनालय

दिव्य सुनहरी मनहर आभा गगन दीप सम चमक रही।
वीतराग छवि नासा दृष्टि पद्मासन में दमक रही।।
पर्वत पर पाषाण जिनालय अन्दर दर्शन पाते हैं।
श्रद्धा से हम अर्घ चढ़ाकर पद्मप्रभु गुण गाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे विराजमान श्री पदमप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ वेदी (पद्मप्रभु जिनालय)

श्रमण संस्कृति के परिचायक प्रथम देव श्री आदि जिनेश।
भोग भूमि में योग धारकर सिद्धालय में किया प्रवेश।।
दिव्य रूप की प्रतिमा लखकर अर्घ समर्पित करता हूं।
पुष्पगिरी के आदिनाथ को सुमिरन वंदन करता हूं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे पदमप्रभु जिनालय मध्ये विराजमान श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रप्रभु वेदी (पद्मप्रभु जिनालय)

स्वर्ग लोक से च्युत होकर के, नर भव अनुपम पाया है।
तीर्थंकर गुणधारी जिनवर, चन्द्रप्रभु मन भाया है।।
मेघ पटल का विघटन लखकर, वैरागी मन जाग गया।
चंद्र प्रभु के चरण कमल में, अर्घ चढ़ा भय भाग गया।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे पदमप्रभु जिनालय मध्ये विराजमान श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभु जिनालय सम्मुख मानस्तम्भ

अहंकार विगलित करके ये अर्हम दर्श कराता है।
समवशरण के अग्रभाग में जिन महिमा प्रगटाता है।।
यंत्र मंत्र भक्तामर गाथा आदिनाथ जय घोष करें।
मानस्तंभ जिन अर्घ चढ़ाऊँ ऋद्धि सिद्धि संतोष वरे।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थ श्री पदमप्रभु जिनालय सम्मुख स्थापित मानस्तम्भ मध्ये विराजमान सर्व जिन प्रतिमाभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रत जिनालय

पीत वर्ण की आभा लेकर खडगासन में रहे विराज।
पाप विनाशक पुण्य विकासक जय हो मुनीसुव्रत जिनराज।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ सजाकर हर्षित हो अर्पित करता।
भव संताप मिटाओ स्वामी परम भाव अर्जित करता।।10।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे स्थापित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूगर्भ नेमिनाथ जी (मुनिसुव्रत जिनालय)

धरती से प्रगटित जिनवर है नेमिनाथ अतिशय कारी।
श्याम वर्ण की मोहक मूरत दर्शन मन को सुखकारी।।
भूत भविष्यत वर्तमान के, ह्रीं चौबीसी को ध्याये।
पारस मल्ली वासु पद्म जिन, अर्घ चढ़ा मन हर्षाये।।11।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे मुनिसुव्रत जिनालय मध्ये विराजमान भू-गर्भ प्रगटित नेमिनाथ जिनेन्द्रादि सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वर्धमान पुष्पदन्त चन्द्रप्रभु जी (मुनिसुव्रत जिनालय)

अनेकांत के उद्घोषक हैं स्यादवाद मय दिव्य विचार।
वर्धमान जिन शासन नायक हरते सारे कर्म विकार।।
पुष्पदंत अरु चंद्रप्रभु की जिन मूरत शुभ फलदाई।
अर्घ चढ़ाकर करूं वंदना त्रय मूरत मन सुखदाई।।12।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे मुनिसुव्रत जिनालय मध्ये विराजमान श्री चन्द्रप्रभु, पुष्पदन्त श्री वर्धमान जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मंडल

हृदय कमल में परमेष्ठी पद, रत्नत्रय धारण करता।
ऋषि मंडल तीर्थंकर चौबीस, ध्यान लगा नित दुखहर्ता।।
रजत पत्र में बीज मंत्र से, युक्त ह्रीं का ध्यान करूं।
भेद ज्ञान का आश्रय लेकर, अर्घ चढ़ा सम्मान करूं।।13।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे मुनिसुव्रत जिनालय मध्ये स्थापित श्री ऋषि मंडल यंत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत स्कंध अर्घ (मुनिसुव्रत जिनालय)

दिव्य ध्वनि का सार बताती, द्वादशांग मय जिनवाणी।
अक्षर संख्या पद दर्शाती, रजत यंत्र श्रुत वरदानी॥
अंग पूर्व का ज्ञान प्रकट हो, शुद्ध ज्ञान वर्षा कर दो।
अर्घ चढ़ाऊँ बोधि पाऊं, मरण समाधि का वर दो॥14॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे द्वादशांगमय श्रुतस्कंध यन्त्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत जिनालय सम्मुख मानस्तम्भ

कलशा ऊपर तीन लोक का, दर्श कराता है आकार।
शतक आठ जिन बिम्ब विराजे, महिमा जिसकी अपरम्पार॥
शासन नायक वर्धमान की, कीर्ति पताका फहराये।
पुष्पगिरी में दर्शन कर लो, दिव्य नाद नित गुंजाये॥15॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे मुनिसुव्रत जिनालय सम्मुख स्थापित मानस्तम्भ मध्ये विराजमान सर्व जिन प्रतिमाभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभु भगवान (त्रय मंजिल भवन)

नील गगन के नीचे सुंदर, पर्वत ऊपर मनहारी।
दिव्य पद्म पर पद्मासन में, पदमप्रभु प्रतिमा प्यारी॥
कर्म बेड़ियां तड़ तड़ टूटे, दर्शन कर श्रद्धान करूं।
पुष्पगिरी के पदम प्रभु को, अर्घ चढ़ा गुणगान करूं॥16॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे पर्वतोपरी सर्वोतंग विराजित पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदन्त भगवान

जल भीतर रहकर जब सीपी मोती को विकसित करता।
रंग-बिरंगे चमचम दाने हार जाप या नग बनता॥

सीपी मंदिर मोती प्रतिमा लखकर अर्घ चढ़ाता हूं।
पुष्पगिरी के मध्य भाग के पुष्पदंत जिन ध्याता हूं।।17।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थो सीप मंदिर मध्ये विराजमान पुष्पदन्त जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत पर स्थापित पार्श्वनाथ भगवान

चिन्तामणी इच्छित फल देकर, मोह भाव विस्तार करें।
पारस जिनवर का स्पर्शन, मोक्ष भाव साकार करें।।
अर्घ चढ़ाकर करूं वंदना, तव पथ चलकर कर्म तजूं।
पुष्पगिरी के पारस जिनवर, भक्तिमय निज धर्म भजूं।।18।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे पर्वतोपरी विराजमान श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्मुखी जिन प्रतिमा

चतुर्मुखी जिनराज विराजे चउदिश मंगलकारी है।
आदिनाथ महावीर प्रभु जी तीर्थंकर हितकारी है।।
चंद्रप्रभु चंचलता मेटे शांतिनाथ कल्याण करें।
अर्घ चढ़ाकर करूं वंदना चतुर्गति अवसान करें।।19।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे पर्वतोपरि विराजमान श्री आदिनाथ, चन्द्रप्रभु, शान्तिनाथ, महावीर स्वामी चतुर्मुखी जिन प्रतिमाभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तलघर स्थापित चौबीसी

जग वर्धन पापों से होता, तीर्थंकर ने बतलाया।
आत्म विहारी ध्यान लगाकर, निज जिनत्व को प्रगटाया।।
तलघर मन्दिर चौबीसी जिन, बारम्बार जपूं सुखकार।
अर्घ चढ़ाऊँ बालयति जिन, पाने संयम का उपहार।।20।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे तलघर स्थित चौबीसी जिनप्रतिमाभ्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरित मणिमय चौबीसी मानस्तम्भ

हरित वर्ण के चौबीसी का मानस्तंभ निराला है।
संशय विभ्रम मोह विनाशक देता ज्ञान उजाला है।।
श्रद्धा पूर्वक अर्घ चढ़ाकर सम्यक दर्शन पाऊंगा।
जिन मारग पर कदम बढ़ाकर आठों कर्म नशाऊंगा।।21।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे विराजमान रत्नमयी हरित मणिमय चौबीसी जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शास्त्र मंदिर अर्घ

अरहन्त देव की दिव्य ध्वनि से, जो भी निकली है वाणी,
स्याद्वाद अनेकान्तमयी वह, कहलाती है जिनवाणी।
नय निक्षेप तत्व पदार्थ का, इसमें पूर्ण विवेचन है,
भव तरने की बात इसी में, संशय इसमें लेश न है।।22।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे स्थित शास्त्र मंदिर मध्ये स्थापित संपूर्ण द्वादशांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ जी (शास्त्र मंदिर)

कामदेव चक्री तीर्थंकर, ऐरानंदन शांति जिनेश।
अतिशय कारी भू प्रगटित हैं, नाम जाप हरता दुख क्लेश।।
शांत छवि शांति बरसाती, धर्म मार्ग बतलाती है।
अर्घ चढ़ाकर वंदन करता, शांत भाव प्रगटाती है।।23।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे शास्त्र मंदिर मध्ये विराजमान श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी (शास्त्र मंदिर)

जिनशासन के दिव्य सूर्य हैं, वर्धमान महावीर महान।
अंतिम शासन नायक वीरा, सन्मति का देते वरदान।।

मिथ्या भाव हटाकर भव का, सारे पाप मिटाते हैं।
अर्घ चढ़ाकर करूं वंदना, निज गुण मन प्रगटाते हैं॥24॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे शास्त्र मंदिर मध्ये विराजमान श्री महावीर स्वामी जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहुबली (सीढ़ी ऊपर)

मुक्ति के सोपान बने हैं, दृढ़ सन्यासी बाहुबली।
एक वर्ष तक खडगासन में, ध्यान लगाये कर्मदली॥
शांत सौम्य स्वरूप निरखते, मदनजीत योगी मुनिराज।
अर्घ चढ़ाकर करूं वंदना, काम विजेता श्री जिनराज॥25॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे विराजमान श्री बाहुबली स्वामिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्त निवास मंदिर

पंच शिखर का संत भवन है, रत्नमयी चैत्यालय हैं।
भू प्रगटित श्री पार्श्वनाथ की, लघु प्रतिमा जिन आलय है॥
मुनि आर्यिका नित वन्दन कर, निज चर्या को जाते हैं।
वैरागी मेरा जीवन हो, भाव अर्घ चढ़ाते हैं॥26॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे सन्त निवास मध्ये भू-गर्भ प्रगटित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि सर्व रत्नमयी जिन प्रतिमाभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमल सागर जी

परम प्रभावक तीर्थ विकासक, महाऋषि समता धारी।
विमल सागर गुरुदेव हृदय से, वात्सल्य करते भारी॥
पुष्पगिरी कलशा मंदिर में, आप विराजे कृपा निधान।
अर्घ चढ़ाऊं विमल भाव से, पंचम युग के हैं भगवान॥27॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे श्री विमल सागर गुरु चरण कमलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदंतसागर जी

दर्शन ज्ञान चरण तपधारी, दूरदर्शी गुणवान गुरु।
बोध गम्य आगम उपदेशक, तार्किक श्री विद्वान् गुरु॥
दृढ़ संकल्पी कृपा दृष्टि से, पुष्पगिरी तीरथ पाया।
हो कृतज्ञ श्री गुरु चरणों में, अर्घ्य चढ़ा मन हर्षाया॥28॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थ प्रणेता आचार्य श्री पुष्पदंतसागर चरण कमलभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण अर्घ

पुष्पगिरी का तीरथ अनुपम, पुष्पदन्त की छाँव है।
जिन आगम गुरु दर्शन का यह, सिद्धालय सा गाँव है॥
पाप कषाय से मुक्त रहूँ मैं, समताधर संयम धारूँ।
महाअर्घ तीरथ में अर्पित, निज जीवन को श्रृंगारूँ॥29॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थे विराजमान सर्व जिन प्रतिमाभ्यो नमः पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष यक्षिणी

कुमुल यक्ष मनोवेगा देवी, पद्मप्रभु के सम्मुख हैं।
पद्मावती धरणेन्द्र देव भी, पार्श्व प्रभु के रक्षक हैं॥
क्षेत्रपाल कुष्मांडिनी देवी, पर्वत पर पहरा देते।
सम्यक दृष्टि देव देवियां, श्रद्धा को गहरा देते॥30॥

ॐ आँ क्रौं पुष्पगिरी तीर्थे स्थित सर्व अधिष्ठा यक्ष यक्षि, क्षेत्रपालादि दैव्ये फल पुष्पं मोदके ग्रहाण ग्रहाण समर्पयामि।

जयमाला

दोहा

पार्श्वनाथ वंदन करूं, हृदय पद्म खिल जाए।
शांतिनाथ जयघोष कर, नेमिनाथ सिरनाय॥

शांत निराकुल पार्श्वनाथ की, प्रतिमा अतिशयकारी है।
पंद्रह शतक पुरानी प्रतिमा, कष्ट क्लेश दुख हारी है।।
माता वामा अश्वसेन घर, नगर बनारस जन्म लिया।
खुशियों की सौगात लुटाकर, नर देवों को धन्य किया।।
जलते नाग नागिनी लखकर, णमोकार उच्चार लिया।
बाल ब्रह्मचारी दीक्षा ले, निज आतम उद्धार किया।।
अहिक्षेत्र की धरा धाम में, घाती कर्म नशाया है।
कमठासुर का मान भस्म कर, केवल दीप जलाया है।।
शत वर्षों की आयु पाकर, तीर्थराज सम्मेद गए।
शेष अघाती कर्म विनाशे, सिद्धालय जा बैठ गए।।
तीर्थ काल सबसे छोटा पर, यशो काल है बृहद विशाल।
जहां-जहां प्रतिमाएं होती, भक्तजनों को करे निहाल।।
पुष्पगिरी के तीरर्थ नायक, पार्श्वनाथ महिमा न्यारी।
परिक्रमा में चौबीस जिनवर, दर्शन वंदन सुखकारी।।
गुरु पुष्प को स्वप्न दिखाकर, पुष्पगिरी में आई है।
सर्प बिच्छू का जहर चढ़े ना, अतिशय खूब दिखाई है।।
जब से पारस पर्वत पर आ, पुष्पगिरी में विराजित हैं।
पुष्पगिरी नित विकसित होता, भारत भर में शोभित हैं।।
पुष्पदंत गुरुदेव भावना, स्वप्न सभी साकार हुआ।
सेवा शिक्षा संस्कृति का, तीर्थ बड़ा विस्तार हुआ।।
पदम प्रभु का मंदिर सुंदर, पुष्प गुरु के इष्ट जिनेश।
मनमोहक जिन प्रतिमा भीतर, शांत विराजे कष्ट हरेश।।
अष्टधातु की खडगासन श्री, मुनिसुव्रत की प्रतिमा है।
द्वादशांग अरु ऋषिमंडल के, रजत यंत्र की महिमा है।।
सहस वर्ष प्राचीन मूर्ति जो, नेमीनाथ की शोभ रही।
रत्नमयी त्रिकाल चौबीसी, भक्तों का मन मोह रही।।

वासुपूज्य और पदम प्रभु की, मंगल प्रतिमा का वंदन।
पार्श्व मल्ली जिन हरित बिम्ब है, चरणों का नित अभिनंदन॥
नवग्रह जिनदेवों की प्रतिमा, नवग्रह के सब कष्ट हरे।
संत भवन का रत्न जिनालय, हर मन में संतोष भरे॥
जिनवाणी आकार लिए इक, बृहद शास्त्र का मंदिर है।
गिरनारी अरु ग्रंथ लिपि की, प्रति कृति भी अंदर है॥
णमोकार मय षट्खण्डागम, पुष्पदंत की रचना है।
सुंदर जिन आगम का संग्रह, इस मंदिर की गरिमा है॥
भक्त सदा श्रुत मंदिर आकर, अपना ज्ञान बढ़ाते हैं।
देव शास्त्र गुरु दर्शन पाकर, फूले नहीं समाते हैं॥
बाहर बाहुबली विराजे, ध्यान मग्न खड़गासन है।
चतुर्मुखी जिनबिम्ब अनुपम, नमन करें मन पावन है॥
मध्य भाग में तीर्थंकर श्री, पुष्पदंत जी रहे विराज।
सीपी में मोती सम चमके, त्रिभुवन नायक श्री जिनराज॥
पार्श्वनाथ को वंदन करके, त्रय मंजिल चढ़ते जाये।
दिव्य पद्म पर पद्मासन में, पदम प्रभु दर्शन पाए॥
हाथ जोड़कर नयन खोलकर, जिन मूरत को देख रहे।
संत समाधि छत्री भवना, वृद्धाश्रम उल्लेख करें॥
गौशाला स्कुल दिखे दो, कलशा त्रय शुभ द्वार दिखे।
तीनों मानस्तंभ नमे हम, गौतम सा उद्धार मिले॥
मल्ली नेमी पारस वीरा, वासुपूज्य है बालयति।
भू प्रगटित खड्गासन प्रतिमा, नमन करूँ मैं शुद्ध मती॥
पदम प्रभु के कमल चिन्ह सा, खिलता तीरथ प्यारा है।
सेवा शिक्षा धर्मध्यान का, भाव जगे यह नारा है॥
अल्प समय में वृहद कार्य ले, दिन प्रतिदिन बढ़ता जाए।
प्राणी मात्र को सम्यक पथ दे, तीर्थ सूर्य चढ़ता जाए॥

भक्तों की भक्ति का साधन, सभी जगह में चमक रहा।
सोलह कारण के साधन से, पुष्पगिरी भी पनप रहा।।
पुष्प गिरी के जिन मंदिर में, जितनी प्रतिमा शोभित हैं।
चरण वंदना अर्घ समर्पित, जयमाला मनमोदित है।।

दोहा- **पुष्पगिरी की अर्चना, सर्व पाप विनशाय।**
"सौरभ सागर" भक्ति कर, आत्मिक सुख भी पाए।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पगिरी तीर्थ स्थित समस्त जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घ्यपद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी का अर्घ्य

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया।।
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष।।

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

आचार्य श्री सौरभ सागर जी का अर्घ्य

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन शृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणाचार्य पुष्पदंत सागर जी पूजन

स्थापना

मंगल मूरत दिव्य स्वरूपी, भव्यों के मनहारी हैं।
राग तजें वैराग भजें, गुरु पुष्पदंत उपकारी हैं।।
जीवन को जीवन्त बनाने, मोक्ष मार्ग स्वीकार किया।
महातपस्वी ज्ञान मनीषी, मम जीवन उद्धार किया।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य पुष्पदंत सागर गुरुवर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रूं गणाचार्य पुष्पदंत सागर गुरुवर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रूं गणाचार्य पुष्पदंत सागर गुरुवर! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

जल स्वभाव से निर्मल नीचे, बहता प्यास बुझाता है।
पुष्पदंत गुरु विनय शील बन, सबका भाग्य जगाता है।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

तप से सुरभित तन पावन है, चन्दन सम वाणी तेरी।
मन संताप मिटाने वाली, अपनापन जय हो तेरी।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

द्वादशांग का ज्ञान भरा जो, अक्षय रूप से बाँट रहे।
मन वच तन को अक्षत करके, कर्म कालिमा छाँट रहे।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: अक्षय-पद-प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

मुख-मण्डल पुष्पों-सा कोमल, खिला खिला-सा रहता है।
भक्तों का मन रूप निरखकर, आनन्दित हो कहता है।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

तन वाहन भोजन से चलता, अल्प रूप में ग्रहण करें।
श्रावक श्रद्धा से चर्या कर, अपने भव का भ्रमण हरे।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

ज्ञानामृत की दिव्य ज्योत से, मन का दीपक जला रहे।
मन अंधियारा दूर हटाकर, मोक्ष मार्ग पर चला रहे।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अग्नि मे जलकर धूपं तो, महक बिखेरा करता है।
गुरुवर तेरा वात्सल्य तो, चहक उकेरा करता है।।
मन श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदन्त गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वंदना करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

डाली से संबंधित फल ज्यों, बढ़ता पकता फलता है।
गुरुवर तेरे चरण वंद्य से, मोक्ष मार्ग मम चलता है।।

मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्पों की, शुभ सामग्री पावन है।
दीप धूप नैवेद्य फलों से, अर्घ बना मन भावन है।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदंत गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलेभ्यो: अनर्घ पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पुष्पदंत जयवन्त हो, धारें पद अरहन्त।
गाऊँ जयमाला गुरु, पाने पद निर्ग्रन्थ।।

जयमाला

जय पुष्पदंत गुरु सन्त आप, जय धर्म मार्ग के सूर्य आप।
जय पर उपकारी दिव्य रूप, जय करुणाधारी गुण अनूप।।1।।
जय श्रमण संस्कृति के नेता, जय त्याग रूप इन्द्रिय जेता।
जय रत्नत्रय धारी महान, जय धर्म धुरंधर ज्ञानवान।।2।।
जय जय जय जय गुरु पुष्पदंत, जय हो जय हो जय जैन सन्त।
जय जय जय जय गुरु पुष्पदंत, जय हो जय हो जय जैन सन्त।3।।
है कोमल पितु मथुरा माता, पर उनसे ना तेरा नाता।
जब उमर हुई छब्बीस साल, मुनि दीक्षा ले निज को सँभाल।।4।।
गुरु विमल सिन्धु ने दी दीक्षा, अपनी क्षमता से ली शिक्षा।।
फिर नगर नगर विहार किया, जैनागम को विस्तार दिया।5।।
गुरु जय हो जय हो जय तेरी, गुरु मेटो भव भव की फेरी।।
गुरु जय हो जय हो जय तेरी, गुरु मेटो भव भव की फेरी।।6।।

गुरु भारत भर में भ्रमण किया, सबने धर्मामृत श्रवण किया।
गुरु भवोदधि के तारक हो, गुरु भक्तों के उद्धारक हो॥7॥
गुरु दीर्घ तपस्वी तीरथ हो, तप त्याग की अद्‌भुत मूरत हो।
गुरु भ्रम के जाल हटाते हो, गुरु मोक्ष मार्ग प्रगटाते हो॥8॥
गुरु पुष्पदंत की जय बोलो, जय बोलो हिय के पट खोलो।
गुरु पुष्पदंत की जय बोलो, जय बोलो हिय के पट खोलो॥9॥
तुम पंच महाव्रत धारी हो, तुम क्षमा शील अवतारी हो॥
तुम संघर्षों में हँसते हो, तुम उपसर्गों को सहते हो॥10॥
तुम निस्पृह योगी ज्ञाता हो, तुम अपने भाग्य विधाता हो॥
तुम अद्‌भुत हो तुम अनुपम हो, तुम मम जीवन के दर्पण हो॥11॥
जय हो जय हो जय गुणवन्त, जय हो जय हो जय निर्ग्रन्थ॥
जय हो जय हो जय गुणवन्त, जय हो जय हो जय निर्ग्रन्थ॥12॥
जो भव्य निकट आ भक्ति करे, वह दिव्य ज्योति से शक्ति वरे।
मैं हूँ तेरा छोटा बालक, गुरु आप कृपा सिन्धु पालक॥13॥
गुरु तेरी पूजा करता हूँ, अपने दुर्गुण को तजता हूँ।
गुरु वरद हस्त सिरपर रख दो, मुझको निज संयम से भर दो॥14॥
जय संयमधारी ज्ञानवन्त, जय वर्तमान के श्रेष्ठ सन्त।
जय संयमधारी ज्ञानवन्त, जय वर्तमान के श्रेष्ठ सन्त॥15॥
मैं अर्घ चढ़ा विनती करता, तेरे पथ चलकर ही तरता।
मैं शक्ति हीन अनुरागी हूँ, तुम शक्तिवान वैरागी हो॥16॥
मम अन्तर मन प्रक्षाल करो, मम जीवन को खुशहाल करो।
गुरु जयकारा तेरी करता, 'सौरभ' सुरभित हो भव तरता॥17॥
जय कृपा निधान दिव्य संत, जय जय गुरुवर श्री पुष्पदंत॥
जय कृपा निधान दिव्य संत, जय जय गुरुवर श्री पुष्पदंत॥18॥

दोहा

महाश्रमण महावीर के, प्रतिनिधी हो आप।
'सौरभ सागर' नित नमें, हरने जग संताप॥

ॐ ह्रूं श्रीपुष्पदंत-सागराचार्य-परमेष्ठिने नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु पुष्पदंत चालीसा

दोहा

चरण कमल मस्तक नवा, गुरु को करता याद।
चालीसा आंरभ करूँ, सुनो गुरु फरियाद।।
भटक चुका संसार में, आया तेरे पास।
तड़पन इस संसार की, कर दो गुरुवर नाश।।

चौपाई

जय श्री पुष्पदंत गुरुदेवा, तुमरे इष्ट पद्मप्रभु देवा।
हम सब भक्त तुम्हें हैं ध्याते, तुम भक्तों के कष्ट मिटाते।।
जन्म लिया है जिला भण्डारा, ग्राम गोंदिया उसमें प्यारा।
माँ मथुरा के राज दुलारे, कोमल पितु के हो सुकुमारे।।
एक जनवरी जन्मतिथि है, तेईस वर्ष में प्रज्ञा जगी है।
ब्रह्मचर्य व्रत धार लिया है निज आतम उद्धार किया है।।
क्षुल्लक एलक की ली दीक्षा, माह अठारह पाई शिक्षा।
गर जग से छुटकारा चाहो, भेष दिगम्बर को अपनाओ।।
वाक्य सुना जब तुमने इतना, सोचा जल्दी दीक्षा लेना।
भाव उमड़कर बाहर आये, विमल सागर के दर्शन पायें।।
विमल सिन्धु ने जैसे देखा, दीक्षा का संदेशा भेजा।
झट बोले गुरु दीक्षा दे दो, मेरी नैया तुम ही खेदो।।
निमित्त ज्ञान से इनको लखकर, बना दिया तुमको दीगम्बर।
जैसे ही मुनि दीक्षा पाई, स्वानुभूति की अलख जगाई।।
अनुभूति के होते गुरुवर, पहुँचे ज्ञान के उच्च शिखर पर।
तुमने ज्ञान प्रचार किया है, शुद्ध शास्त्र आधार लिया है।।
अंजुलि भर गुरुवर तुम लेते, दरिया भर कर हमको देते।
रसना का तुमने स्वाद है छोड़ा, ज्ञान ध्यान से नाता जोड़ा।।
प्रवचन वाचस्पति कहलाए, विमल सिन्धु से मान है पाए।
अन्तस चेतना के संवाहक, श्रमण संस्कृति के उत्थापक।।

युवा वर्ग गुरु तुमको चाहे, तुम्हरे पीछे हरदम भागे।
जय जय नाद से गगन गुँजावे, तेरे गुण गौरव को गावे॥
प्रज्ञश्री को जन्म दिया है, जपने मंत्रित जाप्य दिया है।
पद्म प्रभु का नाम जपाते, भूत-प्रेत को दूर भगाते॥
ऋषिमण्डल का जाप लिया है, कई मंत्रों को सिद्ध किया है।
मंत्रों के ज्ञाता ज्योतिषी, समाधान के ज्ञान मनीषी॥
बाल संघ के हो तुम नायक, जिन आगम के हो तुम ज्ञायक।
पुष्प गिरी का तीर्थ बनाये-सबमें सेवा भाव जगायें॥
हो गुरुवर तुम अतिशयकारी, तुम दुःख के भंजन अधिकारी।
एक दिवस की बात बताता, पुष्पदंत महिमा मैं गाता॥
छत्तीसगढ़ में किया प्रवेश, हुई प्रभावना जहाँ विशेष।
सुन्दरग्राम है जसपुर नगरी, पहुँचे तुम ले ज्ञान की गगरी॥
बड़े-बड़े अधिकारी आकर, प्रवचन सुनते ध्यान लगाकर।
बौद्ध भिक्षु को लाये एस.पी., लकवा का था भारी रोगी॥
किसी तरह दर्शन को आया, तन में इक झटका-सा पाया।
गुरु आज्ञा से झूला झुलाया, रोग हाथ का दूर भगाया॥
कण्ठ रोग भी दूर किया है, जब तुमने आशीष दिया है।
शान्तिनाथ विधान कराया, लकवा हाथ का शीघ्र पलाया॥
यह अतिशय गुरु तेरा ही था, तव चरणन झुकता मम माथा।
चालीसे को हम सब गायें, पुष्प गुरु को शीश झुकायें॥

दोहा

नित इकतीसहि बार, पाठ करें इकतीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, ध्यान हृदय में लाय के॥
रोग शोक सब दूर हों, पास पाप आवें नहीं।
जीवन में घुल जाय, 'सौरभ' की सुरभि गुरु॥

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रूं पुष्पदंत गुरुवे नमः

गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी की आरती

ओम जय पुष्पदंत स्वामी, स्वामी जय पुष्पदंत स्वामी
तुम हो पाप निवारक-2, पुण्य वृद्धि दानी,
ओम जय पुष्पदंत स्वामी॥1॥
गोंदिया नगर में जन्म लिए थे, हो करुणाधारी,
स्वामी हो करुणाधारी,
हमको पार करो तुम-2, तव गुण है भारी,
ओम जय पुष्पदंत स्वामी॥2॥
विमल सागर से दीक्षा पाई, विद्या ज्ञान दिया,
स्वामी विद्या ज्ञान दिया,
गुरु द्वय चरण में रहकर-2, सेवा खूब किया,
ओम जय पुष्पदंत स्वामी॥3॥
गुरु तुम दीपक हम हैं बाती, धरम की ज्योति जले,
स्वामी धरम की ज्योति जले,
श्रद्धा घृत को लेकर-2, आरती तेरी करें,
ओम जय पुष्पदंत स्वामी॥4॥
पंच महाव्रत धार के तुमने, जग से मुख फेरा
स्वामी जग से मुख फेरा,
राजा हो या भिखारी-2 सब पर प्रेम, तेरा
ओम जय पुष्पदंत स्वामी॥5॥
आरती करते तेरी, दूर करो तम को,
स्वामी दूर करो तम को दूर,
'सौरभ' सेवक तेरा-2, पार करो उसको
ओम जय पुष्पदंत स्वामी॥6॥

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की पूजा

स्थापना

सौरभ सागर गुरु को, नमन हो बारम्बार।
श्रद्धा पुष्प चढ़ा रहे, करना तुम उद्धार।।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो, सौरभ सागर महाराज।
जिह्वा गुण गाती रहे, हो मुनिवर सरताज।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

रगड़ रगड़ कर ये तन धोया, मन का मैल ना धो पाए।
इसीलिए तो गुरुवर क्षीरोदधि, से जल लेकर आए।।
निर्मल जल अर्पित करते हैं, जन्म जरामृत नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

तरह तरह के लेप किए पर, तन संताप ना दूर हुआ।
जितना इसका शमन किया यह, उतना ही फिर और बढ़ा।।
मलयागिर चन्दन अर्पित तुमको, भव संताप को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

संसार दुःखों से भरा हुआ, नहीं मिलता मुझे किनारा है।
मोह माया से जकड़ा जीवन, पर ना कोई सहारा है।।

उज्जवल अक्षत अर्पित तुमको, इनको तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम वेग से घिरे हुए हैं, कैसे बन्धन तोड़े हम।
तरह तरह के इत्र लगाए, इन्द्रीय दास बने हैं हम।।
कोमल पुष्प समर्पित तुमको, काम बाण को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

नाना मिष्ट पकवान डकारे, फिर भी क्षुधा ना शान्त हुई।
जिव्हा के वश होकर मैंने, भक्ष अभक्ष की सुधि खोई।।
सरस नैवेद्य अर्पित तुमको, क्षुधा रोग को ध्वस्त करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में क्षुधा रोग विनाशनाय-नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

अज्ञान तिमिर ने हमको घेरा, कैसे मंजिल पाएंगे।
तेरे ज्ञान की ज्योति पाकर, सहज पार हो जाएंगे।।
ज्ञान से ज्ञान की ज्योति जलती, दीपक तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अष्ट कर्म की दलदल में हम, हरदम फंसते जाते हैं।
पाप कर्म हम करते रहते, फल से नहीं घबराते हैं।।

धूप समर्पित तव चरणों में, अष्टकर्म का दहन करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

लौंग बादाम और किशमिश लेकर, तेरे द्वारे आए हैं।
मोक्ष के फल का स्वाद बता दो, इच्छा मन में लाए हैं।।
फल अर्पित है चरण तुम्हारे, मुक्ति रमा का वरण करूँ।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोक्ष फल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प नैवेद्य, दीप धूप फल ले आए।
तब चरणों में अर्घ चढ़ा के, अष्टम वसुधा पा जाए।।
हम अर्घ समर्पित करते हैं, गुरुवर तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ-पद-प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **भव भव से भटके फिरे, कोई ना तारनहार।**
सौरभ सागर गुरु मेरे, तुम ही करो उद्धार।।

जयमाला

लय (दे दी हमें आजादी....)

सौरभ सागर जी देव, गुरुदेव हमारे।
करते हैं भव से पार, गुरुदेव हमारे।।
माँ चन्द्रप्रभा कोख में, जब आप थे आए।
शुभ स्वप्न देख माता भी, फूली ना समाए।।
गज, सर्प, आग, सूर्य भी, देख लिया था।

अद्वितीय पुत्र जन्मेगा, ये जान लिया था॥1॥

जसपुर में गुरुदेव, तुमने, जन्म लिया था।
जसपुर की माटी को भी, तूने धन्य किया था॥
गुरू पुष्पदंत संघ, जसपुर में पधारे।
बालक सुरेन्द्र पुष्प संग, चल दिया प्यारे॥2॥

तपअग्नि में बारह वर्ष, गुरूदेव तपाया।
मैं भी बनूँ तब सम, गुरु ये मन में है भाया॥
आचार्य गुरुदेव ने, सौरभ बना दिया।
मुनिबाने से गुरुदेव ने, तुमको सजा दिया॥3॥

बाली उमर से सौरभ जी, अमृत पिला रहे।
आहत भी राहत पाके, आशीष पा रहे॥
संस्कार अलख देव, जन जन में जगाए।
संस्कार प्रणेता तभी, गुरुदेव कहलाए॥4॥

सृजन किया गुरुदेव ने, रचना कई लिखी।
सिद्धान्त शतक एक है, नायाब नव कृति॥
जिसने भी गुरुदेव का, साहित्य पढ़ा है।
जैनत्व बोध करके, उसका पाप कटा है॥5॥

बच्चों व शिक्षकों को, चमड़ा मुक्त किया है।
सौरभाँचल तीर्थ का, उपहार दिया है॥
हिसार की नसिया का, भी उद्धार है किया।
मनहर पारस क्षेत्र नाम, उसको दे दिया॥6॥

भू गर्भ में दबे थे, आदि पार्श्व अर वीरा।
अपने ज्ञान योग से, तुम जान लिया था॥
ज्ञान योगी देव गुरूदेव कहाए।
गुरूदेव के जयकार से गगन गुंजाए॥7॥

झज्जर के ग्राम झाडली में वीर थे प्रकटे।
ना देगे वीर मूर्त, ग्रामवासी अड़ गए।।
भक्ति की शक्ति से, महावीर बुलाए।
मंशा पूर्ण वीर, महावीर कहलाए।।8।।

पुष्पगिरी तीर्थ अप्रैल दश महा।
मेला लगा दृश्य अनुपम रहा महा।।
चारों दिशाएं गुंज उठी नमस्कार से।
आचार्य पद प्रतिष्ठा हुई जयजयकार से।।9।।

हम भी तो तेरे दर पे, अरदास लाए हैं।
दर्शन तिहारे मिलते रहे, प्यास लाए हैं।।
जीवन में मेरे 'आशा' की, तुम ज्योत जगा दो।
सुना है तेरा नाम, मेरी बिगड़ी बना दो।।10।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **सौरभ सागर गुरु का, करूँ हमेशा ध्यान।**
भक्त की हर श्वास में, सौरभ सागर नाम।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आचार्य श्री सौरभ सागरजी का अर्घ

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन शृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
आचार्य श्री 108 सौरभ सागर चालीसा

मनमंदिर में आन बसे, सौरभ सागर महाराज।
धर्म की राह दिखा दई, और सँवारे काज॥
ऐसे गुरु का यदि रहे, भक्त के सिर पर हाथ।
रोग शोक सब दूर रहे, सुख की हो बरसात॥

सौरभ सागर गुरु हमारे, भक्तों के सब कष्ट निवारे।
ये गुरुवर है अन्तर्यामी, मन की सारी बाते जानी॥
मनमोहक मुस्कान तुम्हारी, छवि तुम्हारी है मनहारी।
चन्द्रप्रभा जी की कोख में आए, शुभ लक्षण उनको दर्शाए॥
उगता हुआ इक सूरज देखा, सर्पो का एक जोड़ा देखा।
इक जंगल में आग भी देखी, हाथी की इक जोड़ी देखी॥
श्री पाल जी को स्वप्न बताए, फल जाना तो बहु हरषाए।
पुत्र रत्न इक घर आएगा, दावानल सा यश पाएगा॥
मस्त हस्ती सम भ्रमण करेगा, सूरज सम जग में चमकेगा।
बाबा की आँखों का तारा, सुरेन्द्र नाम लगता था प्यारा॥
गुरु पुष्प संघ जसपुर आया, इस बालक का भाग जगाया।
अद्भुत प्रतिभा देखी तुझमें, ज्ञानयोगी इक छिपा था तुझमें॥
पिता से तुमको मांग लिया था, मात पिता ने सहर्ष दिया था।
तप अग्नि में तुम्हें तपाया, बारह बरस का समय बिताया॥
क्षमावाणी का शुभ दिन आया, दीक्षा धारुँ ये था भाया।
21 सितम्बर दिन पुण्यशाली, होती गुरु की दीक्षा दिवाली॥
चहुँ दिशि अम्बर बने तुम्हारे, वीतरागी मुद्रा जब धारे।
वाणी तेरी शीतल चन्दन, शीघ्र मिटाती मन का क्रन्दन॥
जिस नगरी भी कदम बढ़ाए, अतिशय अपने खूब दिखाए।
धर्म की ऐसी अलख जगाई, 'संस्कार प्रणेता' उपमा पाई॥
जेल में जो उपदेश सुनाए, मद्य माँस से लोग छुड़ाए।
जब बच्चे उपदेश हैं सुनते, शहद ब्रैड व चमड़ा तजते॥
जिस नगरी भी किया चौमासा, भक्तों के मन भर दी आशा।
निर्बल तुझसे बल पा जाए, वीराने हरियाली पाए॥

जंगल में मंगल करते हो, संकट सारे तुम हरते हो।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, उसकी तो किस्मत है सँवारी॥
एक प्रेरणा तुमसे पाई सौरभाँचल की नींव धराई।
सौरभाँचल एक तीरथ प्यारा, नव जिनग्रह का देख नजारा॥
वृहद आदि पद्मासन प्रतिमा, नीलाम्बर का लगा चँदोवा।
श्रुत स्कन्ध मंदिर बनवाया, द्वादशांग का मान बढ़ाया॥
रत्न चौबीसी मन को भाए, देख देख के हिय हरषाए।
सूनी थी हिसार की नशिया, पर भू भीतर दबी थी निधिया॥
अपने ज्ञान ध्यान से जाना, त्रय जिनदेवा भीतर जाना।
हाथों से मिट्टी खुदवाई 'पार्श्व' 'आदि' 'वीरा' छवि पाई॥
जयकारों से गगन गुँजाए, ज्ञानयोगी गुरुदेव कहाए।
'मनहर पारस क्षेत्र' कहाया, सहस्त्र कलश से न्हवन कराया॥
मंशापूर्ण श्री महावीरा, सेवा भाव जगावे धीरा।
जीवन आशा नाम पुकारा, विकलांगों का बने सहारा॥
ज्ञानी मन चिंतन करता है, हर पल काव्य ग्रन्थ लिखता है।
धर्म गगन में करे विहारा, "सिद्धांत शतक" आगम है प्यारा॥
सब शूलों की सेज उठाते, जैनत्वो का बोध कराते।
पापों के दहकते अंगारे, प्रेरक प्रवचन बुझाते सारे॥
फैशन एक अभिशाप बताया, गर्भपात से सबको बचाया।
जैन विधान सदा करवाते, भक्तों के शुभ भाव जगाते॥
ख्याति लाभ की नहीं कामना, पूजा की भी नहीं चाहना।
विज्ञापन से दूर ही रहते, चर्या सावचेत हो करते॥
आगम के रत्नाकर गुरुवर, शान्त सौम्य छवि सुन्दर गुरुवर।
आशीर्वाद गुरु का फलता, जीवन सहज सरल हो चलता॥
तीर्थराज सम्मेद शिखर है, श्री सौरभांचल का परिसर है।
सहस्र वर्ष प्राचीन है प्रतिमा, अतिशयकारी पारस महिमा॥
10 अप्रैल का शुभ दिन आया, पुष्पगिरी में उत्सव छाया।
रवि पुष्य नक्षत्र कहाया, पुष्पदन्त ने सूरी बनाया॥
देश विदेश से यात्री आये, दृश्य देखकर अति हर्षाये।
सौरभ गुरु को शीश नवाया, धन्य धन्य सौभाग्य जगाया॥

जिस धरती पर कदम बढ़ाए, वो माटी चन्दन बन जाए।
घर घर ज्ञान के दीप जलाए, अज्ञान तिमिर मन का हट जाए।।
दर्शन पा मन पुष्प खिला है, वर्द्धमान का दर्श मिला है।
जब से तेरा साथ मिला है, 'हम-सब' को भगवान मिला है।।

दोहा– सौरभ सागर चालीसा, मन से जो भी ध्याय।
त्याग धर्म बढ़ता रहे, गुरु अनुकंपा पाए।।
गुरुवर तेरे चरण में, नमन हो बारम्बार
पापों का क्षय हो मेरा, भव से हो जाऊँ पार

(9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रूं सौरभ सागर गुरुवे नमः।

आरती आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की

(लय - तन डोले, मन डोले ...)

सौरभ सागर की, गुण आगर की
शुभ कंचन दीप सजाय के, आज उतारूँ आरतिया
माता चन्द्रप्रभा जी के जाये, श्रीपाल जी के सुत कहलाये
पुष्पदंत जी की बगिया से, ये कोमल पुष्प है आये
सुगन्धित कोमल पुष्प है आये
गुरु की सुरभि से सुरभित होकर कंचन दीप सजाय के ...
गुरु की छवि है इतनी निराली मन को बहुत लुभाती
महिमा गुरुवर के वचनों की जन-जन को हर्षाती
जय गुरुवर जन-जन को हर्षाती
इनके चरणन शत् शत् वन्दन शुभ कंचन दीप सजाय के...
जो भी इनकी शरण में आए, सब संकट कट जाये
हम भी भटके हैं जन्मों से हमको भी पार लगाये
हो जय गुरूवर, हमें भी पार लगाये
यह विनती करें तोसें अरज करें शुभ कंचन दीप ...

अर्घ्यावली

समुच्चय अर्घ

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया।।
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घावली

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

आदिनाथ प्रथमेश जिन, धर्म कर्म दातार।
भव वारिधी से पार कर, मेटो मम संसार।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मधुरा धारी प्रभु, धर्म बढ़ावें रोज।
अजितनाथ भगवान के बन्दूँ चरण सरोज॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवनाथ भगवान का अर्घ्य

संभव सम भव अन्त हो, पाऊँ सिद्ध स्वभाव।
भावों में समभाव हो, तजूँ विकारी भाव॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनन्दननाथ भगवान का अर्घ्य

अभिनन्दन वन्दन करूँ, क्रन्दन कर्म नशाय।
जग बन्धन को तोड़कर, सिद्धालय को पाय॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ भगवान का अर्घ्य

मिथ्यावाद को दूर कर, स्याद्वाद प्रगटाय।
दुर्बुद्धि दुर्ध्यान तज, सुमतिनाथ शिर नाय॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ भगवान का अर्घ्य

पद्मासन बैठे प्रभू, आतम पद्म खिलाय।
पद्म खिले निज ध्यान का, पद्म प्रभु सिर नाय॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

वीतराग निज ज्ञान में, झलके तीनों लोक।
तत्व प्रकाशक महामुनि, चरण सुपारस धोक॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु भगवान का अर्घ्य

अखिलेश्वर हे महाव्रती, तीर्थ प्रवर्तक आप।
धवल वर्ण तन आत्मा, चन्द्र प्रभु निष्पाप।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदन्त भगवान का अर्घ्य

भव भंजक भगवान हैं, पुष्पदंत शुभ नाम।
मगर चिह्न तन श्वेत है, शत शत करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मामृत का दान दे, शीतल शिवपद पाय।
मम आतम शीतल करे, छोड़े विषय कषाय।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान का अर्घ्य

जय जय श्रेयांशम तव गुण पासं, कर्म विनाशं भक्ति करम्।
पावन पद बन्दों जय जिन चन्दों, कृपा करिंदो शान्ति प्रदम्।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

पाँचों कल्याणक महा, चम्पापुर में पाय।
बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराय।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ भगवान का अर्घ्य

बाहर भीतर स्वच्छता, विमल अमल गुणवन्त।
अर्घ चढ़ाकर पूजता, पाने पद अरहन्त।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथ भगवान का अर्घ्य

सुख अनन्त पाया प्रभु, कर कर कर्मन अन्त।
अर्घ चढ़ा वन्दन करूँ, अनन्तनाथ भगवन्त।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ भगवान का अर्घ्य

ध्वनि सुनि ध्रुवधाम की, धैर्य धर्म प्रगटाय।
ध्याता बन निज ध्येय को, धर्मनाथ सम ध्याय॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

जय त्रिभुवन नायक आतम ज्ञायक, कर्म विनाशक शान्ति नमो।
जय शिवपुरवासी ज्ञान प्रकाशी, धर्म विकासी शान्ति नमों॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ भगवान का अर्घ्य

कर्म जहर निज आत्मा, मरण देय भटकाय।
भक्ति कुन्थुनाथ की, सर्व जहर विनशाय॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ भगवान का अर्घ्य

दर्पण में मुख रूप लख, भूला आत्म स्वरूप।
अरहनाथ सर्व दर्प हर, पाया चिन्मय रूप॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ भगवान का अर्घ्य

हे लेश्या तीता भव्या मीता, परम पुनीता मल्लि जिनेश।
जय आत्म विहारी बाल ब्रह्मचारी, आरती उतारी भक्ति विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अर्घ्य

शत इन्द्रों ने भक्ति कर, नाशा भव भटकाव।
मुनिसुव्रत की अर्चना, देवे निज स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथ भगवान का अर्घ्य

नमिनाथ नमता रहूँ, नम्र भाव मन धार।
अहंकार सब मेट कर, धारूँ शुद्ध विचार॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

पशु बन्धन को देखकर, धार लिया वैराग्य।
सर्वदर्शी नेमी प्रभु, नमन जगावे भाग्य॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

क्षायिक नव लब्धि महा, योग निरोध कर पाय।
पार्श्व प्रभु की वन्दना, पाऊँ निज स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ्य

शासन नायक वीर जिन, अनेकान्त सरताज।
समवशरण सन्देश दे, पाया मुक्ति राज॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी का अर्घ्य

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरुवर पावन दीप धूप वन्दन भाया॥
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा॥

ॐ ह्रीं श्री मंशापूर्ण महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस निर्वाण भूमि अर्घ्य

तीरथ है सम्मेद शिखर जी, बीस पधारे श्री निर्वाण।
आदिनाथ कैलाशगिरी से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम॥

नेमिनाथ गिरनार शिखर से, निराकार पद पाया है।
पावापुर महावीर प्रभु ने, आठों कर्म नशाया है।।
तीर्थंकर चौबीसो जिनवर, परम धाम को पाये हैं।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाकर श्रद्धा शीश झुकाये हैं।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणस्थली श्रीसम्मेदशिखर-गिरनार-कैलाशगिरि चम्पापुर-पावापुर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ जिनवाणी अर्घ

दिव्य ध्वनि का निर्मल जल ले, तत्वों का चन्दन लाया।
अंग पूर्व का अक्षत लेकर, धर्म पुष्प मन खिलवाया।।
नय निक्षेप का नेवज लेकर, गुणस्थान का दीप जला।
अष्ट कर्म का धूम उड़ाया, निराकार फल मोक्ष मिला।।
चारों अनुयोगों से पूरित, जिन आगम को जान रहे।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाकर, जिनवाणी सम्मान करें।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायै: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन कम नौ करोड़ मुनिराजों का अर्घ्य

तीन घटाकर नौ करोड़ की, संख्या मुनिवर की जानो।
धरती पर जीवन्त जिनेश्वर, उन पर श्रद्धा हित मानो।।
तपसी जल से भिन्न कमल वत्, जीवन अपना जीते हैं।
ढाई द्वीप के मुनिराज को, अर्घ समर्पित करते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अढाईद्वीप-मध्ये-तीन-कम-नौ-करोड़-मुनिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी का अर्घ्य

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया।।

तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष।।

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

आचार्य श्री सौरभ सागर जी का अर्घ्य

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन शृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ सिद्ध पूजूँ चावसों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भावसों।।1।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रचे गणी।
पूजूँ दिगम्बर-गुरुचरण शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म-दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश-रत्नत्रय जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पन मेरु नंदीश्वर, जिनालय खचर, सुर, पूजित भजूँ।।4।।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जपि होय पति शिवगेह के।।6।।

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय॥7॥

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंच परमेष्ठिभ्यो नमः, प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यनुयोगेभ्यो नमः, दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः, सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः, जल के विषैं थल के विषैं आकाश के विषैं गुफा के विषैं पहाड़ के विषैं नगर नगरी विषैं ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताललोक विषैं विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः, पाँच भरत पाँच ऐरावत दशक्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनराजेभ्यो नमः, नन्दीश्वरद्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः, पंचमेरुसंबंधी अस्सी जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः, सम्मेदशिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार सोनागिर मथुरा तारंगा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः, जैनबद्री मूडबिद्री देवगढ़ चन्देरी पपौरा हस्तिनापुर अयोध्या राजगृही चमत्कार जी श्रीमहावीरजी पद्मपुरी तिजारा बड़ागाँव पुष्पगिरी, सौरभांचल पार्श्वनाथ, मंशापूर्ण महावीर आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः, ॐ ह्रीं श्री मंतं भगवन्तं कृपावन्तं श्रीवृषभादि महावीरपर्यन्तं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षत्रे आर्यखंडे.....नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे..... मासे.....शुभे.....पक्षे शुभ.....तिथौ..... .....वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं (जलधारा) अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ (हिन्दी)

शांतिनाथ! मुख शशि उनहारी, शील गुण व्रत, संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमल दल लाजें।।1।।

पंचम चक्रवर्ती पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमौं शांतिहित शांतिविधायक।।2।।

दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।3।।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत् पूज्य पूजौं सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघ को।।4।।

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके, इंद्रादिदेव अरुँ पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वर वंश जगत् प्रदीप, मेरे लिए करहु शांति सदा अनूप।।5।।

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को औ यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे।।6।।

होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा।

होवे चोरी न जारी, सुसमय वरषे हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारें, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी।।7।।

घाति कर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करें सब जगत् में, वृषभादिक जिनराज।।8।।

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तौं का, सुजस कहके, दोष ढाँकू सभी का।।9।।

बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौ सेऊँ, चरण जिन के मोक्ष जौ लौ न पाऊँ।।10।।

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहे प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने।।11।।

अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुःख से॥12॥

हे जगबंधु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥13॥

विसर्जन पाठ (हिन्दी)

बिन जाने या जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन भी नहीं, क्षमा करो भगवान्॥
मंत्र हीन धन हीन हूँ, क्रिया हीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजे भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण॥
आए जो जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।
ते अब जावहु कृपा कर, अपने अपने थान॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि

(इसके पश्चात् खड़े होकर आरती करें)

आसिका लेने का पद

श्री जिनवर जी की आसिका, लीजे शीश चढ़ाए।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाए॥

(स्तुति या भजन आदि बोलते हुए वेदी सहित प्रतिमाजी की तीन प्रदक्षिणा देकर धोक देनी चाहिए)

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र

हृदय कमल में अर्हत पद का स्थापन जो है करना,
कार्मन काठ जलावन कारण अग्नि ज्वाला है बनना।
निर्मल है वह निर्मल करता अर्हत पद का दाता,
बारम्बार नमूँ मैं उनको, पाऊँ अक्षय साता।
हृदय कमल की आठ पँखुड़ी उनमें क्रम से रखना,
अर्हत, सिद्ध आचार्य उपाध्याय, साधु सर्व विचरना।
सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र उचरना,
ऐसे आठों पूज्यनीय को, चित में फिर फिर धरना।
ऊँ बीजाक्षर प्रथम उचारै, नमः पल्लव करिये,
ध्यान धरै इन आठों पद का, आनन्द उर में भरिये।
अरहंत पद का ध्यान किये से, सिर की रक्षा होवे,
सिद्ध समूह जपन करने से, मस्तक रक्षित होवे।
सूरि सुगुण मन में ध्याने से, नेत्र सुरक्षित होवे,
चौथे पद के गुण चिंतन से, घ्राण सुरक्षित होवे।
मुख की रक्षा करे साधुगण, दर्शन गर्दन रक्षै,
नाभि रक्षे सप्तम पद, जो सम्यग्ज्ञान सुदक्षै।
सम्यक्चारित्र सर्व अंग को, पाद पर्यन्त सुरक्षे,
ऐसे सकलीकरण करन से, होवे पूजक अक्षै।
ऋषि मण्डल यह पूजन भारी, इसको विधि से करिये,
विघ्नविनाश करें सुखदाता, श्री ब्रह्मचारी उचरियें।

सब द्वीपों के मध्य जम्बूद्वीप बसे,
उसकी है आठ दिशा पूरब आदि लसे।
अर्हंतादि पद आठ उनमें राजत हैं,
करिये उनका ध्यान पाप पलावत है।
मध्य सुदर्शन मेरु कंचनमय सोहे,
उपरि सिंहासन माहि अक्षर ह्रीं मोहे।

उनमें चौबीस जिनेश उनके गुण भारी,
अक्षय निर्मल शांत ताप जाड्य हारी।
निरहंकार निरीह सार, सार गुण सोहे,
सौम्य शुद्ध शुभ रूप तीन लोक मोहे।
तीन लोक के स्वामी यातें राजस है,
कर्म घातिया चूरे यातैं तामस है।
सदगुण से भरपूर सात्विक सोहत है,
ज्ञान तेज से सूर्य भ्रमतम खोवत है।
रूपगंध रस वर्ण इनसे दूर रहे,
तो भी है साकार समरस पूर रहे।
पर को दिया त्याग निज रस में पागे,
परमौदायिक देह आतम गुण जागे।
चूरे है सब कर्म तन को है छोड़ा,
निज रस पी संतुष्ट पर से मुँह मोड़ा।
करी कालिमा दूर आकांक्षा पूरी,
संशय रहा न लेश सब आशा पूरी।
ईश्वर ब्रह्मा बुद्ध ज्योति रूप खड़े,
शाश्वत सिद्ध स्वरूप सब में देव बड़े।
लोकालोक प्रकाश करते नाहि थके,
ऐसे श्री ह्रीं देव मेरे मन में धरे।
एक वर्ण दो वर्ण तीन वर्ण धारी,
चार पाँच हैं वर्ण सब के अधिकारी।
ऋषभादिक चौबीस तीर्थंकर सब ही,
ध्याओ उनको नित्य जैसे निम्न कही।
अर्ध चंद्र आकार ह्रीं का नाद कहा,
उसका वर्ण है श्वेत जैसे चन्द्र महा।
उसमें ध्याओ देव श्वेत वर्ण वाले,
चन्द्रप्रमु पुष्पदंत सब के रखवाले।
श्याम वर्ण की देह बिंदी की कीजै,
उसमें लिखिये नेमि मुनिसुव्रत कीजै।

मस्तक ऊपर भाग लाल वर्ण सोहे,
पद्मप्रभु वासुपूज्य अरुँण वर्ण मोहे।
शिर संलीन ईकार नीलम वर्ण कहा,
सुपार्श्व पार्श्व महाराज थापूँ पूज्य महा।
सोलह श्रीजिन देव कंचनमय देहा,
वे-ह-र मध्य लिखेय होवे सुखगेहा।
रागद्वेष मद मोह जीते इन सबने,
मायालीन में ये राजत हैं सब रे।
इनका सदा ध्यान किये जो ज्वाला निकले,
उनमें वेष्ठित देह मेरी जो उजले
तब नाही विषधर जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
श्री ऋषिमण्डल मध्य ह्रीं का परिकर है,
उसमें रक्षित देह मेरी सुखकर है।
तब नाहिं नागिन जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
सर्वऋद्धि के ईश अर्हत गणधर हैं,
उनके तेज से लोग वेग सब ही व्याप्त है।
उनका ध्यान किये परम सौख्य होगा,
विलय जायेंगे दु:ख मेरे अति वेगा।
पाताल, लौकिक देव, मध्य लोकवासी,
निर्जर ऊरघ लोक सब विमानवासी।
तुम सब ही जिन भक्त साधर्मी भाई,
करना मेरी सहाय सुनिये मनलाई।
मुनिवर है जगमाहिं अवधि श्रुतधारी,
विक्रिया चारण आदि सब ही ऋद्धिधारी।
मुझ पर कीजै कृपा तुम रक्षक सबके,
अतएव पूजूँ पायें विघ्न हरो जनके।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्तुति

हे वीर प्रभो महावीर प्रभो, तेरे चरणों में आया हूँ।
सब पाप ताप संताप हरो, मैं अर्चन कर हर्षाया हूँ।।
आओ आओ प्रभु एक बार, मेरे मन का प्रक्षाल करों।
हे महाश्रमण हे वर्धमान, तुम सन्मति दे जंजाल हरों।।
प्रभु मंशापूरण करते हो, प्रभु संशय तिमिर भी हरते हों।
मैं मन से पूजा तेरी करूँ, सुख सिन्धु से भी भरते हों।।1।।
श्रद्धा का जल कर में लेकर, भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरूवर पावन, दीप धूप वन्दन भाया।।
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु, आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की, पूजा कर सुख पाऊँगा।।2।।
महामना हे महामुनि हे, महायोगी महाज्ञानी हो।
महाशक्ति हे महाज्योति हे, महाप्रभु महादानी हो।।
महाव्रतों को महाभाव से, महावीर ने धार लिया।
मंशापूरण महावीर बन, मानव का उद्धार किया।।3।।
भावों की शुभ निर्मलता ही, भव बन्धन को नित काटें।
निज स्वभाव में रम जा चेतन, खोल राग की सब गाठें।।
भाव-साधना-भाव-समाधी, भाव स्वभाव मे लीन रहें।
द्रव्य भाव द्वय अर्घ्य समर्पित, श्रद्धालय में लीन रहें।।4।।
अन्तिम गर्भ हो चरमोत्तम तन, महावीर-सा बन जाऊँ।
महाअर्घ चरणाम्बुज देकर, वज्र कर्म सब विनशाऊँ।।
तीर्थंकर का गर्भाराधन, गर्भ दोष का नाश करे।
त्रय ज्ञानी समकित तीर्थंकर, धर्मात्मक उल्लास भरे।।5।।
जन्म काल का अतिशय सुखकर, तीर्थंकर ही पाते हैं।
कल्याणक शुभ जन्म मनाकर, नर देवा हर्षाते हैं।।
जन्म मरण की भ्रमण शृंखला, तब पूजा से घट जाये।
अर्घ समर्पित तव चरणों में, मोह तिमिर सब छट जाये।।6।।
वर्धमान अतिवीर वीर जिन, महावीर शुभ नाम कहो।
सद्बुद्धि सन्मार्ग प्रदाता, सन्मति का गुणगान अहो।।
राग-द्वेष मद लोभ मोह सब, नामोच्चारण दूर करें।
अर्घ समर्पित मंशापूरण, धर्मभाव भरपूर भरे।।7।।

दीर्घ साधना कर्म निर्जरा, धर्म ध्यान से नित साधें।
तन मन की इच्छा ज्वाला को, शुक्ल ध्यान जल से नाशें।।
महावीर की वीतरागता, निर्मल-निच्छल-मनहारी।
पूर्णअर्घ चरणों मे अर्पित, वर्धमान दीक्षाधारी।।8।।
केवलज्ञानी अतिशय धारी, चार घातियाँ नाश किया।
प्रातिहार्य आठों सज्जित है, समवशरण प्रवास किया।।
विपुलाचल वैभार गिरी या, पुण्यवान जग जीव जहाँ।
दर्शन पूजन व्रत उपदेशा, पाकर तिरते जीव यहाँ।।9।।

दोहा– अल्पज्ञान लब्ध्यक्षरा, पूरण केवल ज्ञान।
महावीर की देशना, करें आत्म कल्याण।।10।।

भू भीतर देवों द्वारा ही, पूजा सेवा नित होती।
वर्षों तक ना पुण्योदय था, दर्शन फिर कैसे होती।।
सात नवम्बर भू से प्रगटे, मंशापूरण श्री भगवान।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति गाऊँ, वर्धमान महावीर महान।।11।।
भक्ति में तन्मय हो करके, चिन्मय मुरत पाया है।
सिद्ध निरामय निर्मल निश्चल, अविनाशी सुख पाया है।।
हो विरक्त जग उलझन से प्रभु, तेरे दर पर आऊँगा।
आत्म ओज का उद्भव होवे, महावीर गुण गाऊँगा।।12।।
सुख राशि गुणदाता जिनवर, दया सिन्धू महावीर प्रभो।
विघ्न हरण हे मंशापूरण, वर्धमान अतिवीर विभो।।
परमेश्वर हो, प्रतिपालक हो, जिन शासन के नायक हो।।
महा-अर्घ्य चरणों मे अर्पित, सौरभ सागर ज्ञायक हो।।13।।

दोहा

महावीर जिनराज का, अद्भुत है दरबार।
भक्ति से पूजा करूँ, नमन करूँ शतबार।।14।।

धत्ता– जय जय महावीरा भवदधि तीरा, गुण गंभीरा अतिवीरा।
मम धर्म बढ़ावे जिनपद पावें, सौरभ सागर नत धीरा।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र पंचकल्याणक संयुक्त शिवपद-कर्त्ता-भव-जल-निधी सर्वविघ्नव्याधिहर्ता तव भक्ति प्रसादात् सर्व जीव कल्याणमस्तु दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु धन-धान्य समृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु सर्व जीव रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु सम्यग्दर्शन ज्ञान-चारित्र-वृद्धिरस्तु सर्व-ऋद्धि-सिद्धि-भवतु रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

कुछ विशेष जाप

1. ॐ ह्रीं नमो अर्हते रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा अप्रतिहत-शक्ति भवतु ह्रीं नमः।
3. ॐ श्रीं ह्रीं अर्हं श्री नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वसौख्यं कुरु कुरु नमः।
5. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं मम सर्व विघ्न शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं श्रीं वद् वद् वाग्वादिनी ह्रीं नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्टबुद्धिणं।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं।
9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः।
10. ॐ ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वो सहिपत्ताणं झ्रों झ्रों नमः।
12. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं मम इष्ट कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीराय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

जीवन परिचय

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

जन्म	: कार्तिक कृष्णपक्ष अष्टमी (गुरुवार)
	22 अक्टूबर, 1970 जसपुरनगर (छत्तीसगढ़)
बचपन का नाम	: सुरेन्द्र कुमार
पिता का नाम	: श्री श्रीपाल जैन
माता का नाम	: श्रीमती चन्द्रप्रभा जैन
गृहत्याग	: शुक्रवार, 08 अप्रैल, 1983
क्षुल्लक दीक्षा	: शुक्रवार, 17 जनवरी, 1986 छत्तरपुर (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा	: सोमवार, 27 जून, 1988 अंदेश्वर पार्श्वनाथ (राज.)
मुनि दीक्षा	: 21 सितम्बर, 1994 इटावा (उत्तर प्रदेश)
दीक्षा गुरु	: पुष्पगिरि प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी महाराज
आचार्य पद	: 10 अप्रैल, 2022 (पुष्पगिरि)
राजकीय अतिथि	: झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड

:: विशेष कृति ::

1. सिद्धान्त शतक
2. जैनत्व का बोध
3. धर्म गगन में करें विहार
4. प्रेरक प्रवचन
5. फैशन एक अभिशाप
6. शूलों की सेज
7. दहकते अँगारे
8. आओ लौट चलें
9. पत्थर की मानवाकृति
10. प्रतिमा से प्रतिभा जगे
11. सृजन के द्वार पर
12. हे इन्सान! मत बन तू शैतान
13. जैन शिक्षा भाग-1, 2, 3, 4
14. आराध्य आराधना
15. मंगलं पुष्पदन्ताद्यो
16. जैनाचार संहिता
17. श्रावकाचार संहिता
18. श्रमणाचार संहिता
19. भक्ति-सौरभ
20. अर्हत् चरण सपर्या (जिन-देवार्चना)

विधान

21. श्री भक्तामर स्तोत्र
22. श्री कल्याण मन्दिर
23. स्वयंभू चौबीसी
24. श्री मंशापूर्ण महावीर
25. चौंसठ ऋद्धि सिद्धि
26. आचार्य पुष्पदन्तसागर
27. श्री सम्मेदशिखर
28. माँ जिनवाणी
29. कर्मदहन
30. श्री नवग्रह जिनदेव
31. श्री पुष्पगिरी तीर्थ
32. जैन विधान संग्रह

श्री 1008 आदिनाथ भगवान
सौरभांचल, गन्नौर

1200 वर्ष प्राचीन भूगर्भ से प्रगटित
1008 श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी जी
गंगनहर, मुरादनगर

श्री 1008 पद्मप्रभु भगवान
पुष्पगिरी, म. प्र.

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान ''सौरभाँचल'' (निर्माणाधीन)
श्री सम्मेद शिखर जी मधुबन

तीर्थंकर श्री पद्मप्रभु भगवान
का जिनालय (पुष्पगिरी तीर्थ)

तीर्थंकर श्री पुष्पदन्त भगवान का भव्य सीपाकार मंदिर (पुष्पगिरी तीर्थ)